डीएवी न्यूज लेटर

www.davpgcollege.in

देहरादून, जनवरी-मार्च 2025

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग युवा समाज के सकारात्मक कार्यों में लगाए : गणेश जोशी

● कृत्रिम बुद्धिमत्ता के द्वारा व्यक्ति बिना संस्कृति को प्रभावित कार्य करे

संवाददाता

देहरादून। डीएवी पीजी कॉलेज में कृपया बुद्धिमता का भारतीय संस्कृति और भारतीय शिक्षा व्यवस्था विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा की बुद्धिमत्ता आज के समय में बहुत ही प्रासंगिक है और हर क्षेत्र में देखी जा सकती है इसका सबसे अधिक उपयोग आज के युवा कर रहे हैं जिनके हाथ में मोबाइल और लैपटॉप है आज के युवा को कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग समाज के सकारात्मक पक्ष में लगाना चाहिए और इसके द्वारा समाज में हो रहे परिवर्तन के रूप में करना चाहिए लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा भारतीय संस्कृति और ज्ञान व्यवस्था को प्रभावित न करें ऐसा भी विचार करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि के रूप में खजान दास ने कहा की कृत्रिम बुद्धिमत्ता के द्वारा व्यक्ति बिना संस्कृति को प्रभावित कार्य करे ।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती सविता कपूर ने कहा कि भारतीय संस्कृति ने विश्व में जो परचम लहराया है उसे बचाए में रखना भी आज की युवाओं के लिए बहुत जरूरी है इसी क्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सुरेखा डंगवाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति और भारतीय शिक्षा व्यवस्था के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सामंजस्य बैठना आज के लिए चुनौती है और भारतीय संस्कृति में किस तरीके से कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सदुपयोग किया जा सकता है इसे भी ध्यान में रखना है। उच्च शिक्षा

निदेशक प्रोफेसर अंजू अग्रवाल ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय संस्कृति और ज्ञान व्यवस्था को लेकर जो यह राष्ट्रीय सेमिनार की जा रही है इसमें जो निष्कर्ष निकलेगा उसे भी जन जन तक पहुंचाना इस राष्ट्रीय सेमिनार के आयोजकों की जिम्मेदारी है।

कार्यक्रम में तीन की नोट स्पीकर उपस्थित रहे जिसमें एमपी कुलश्रेष्ठ सीनियर डायरेक्टर नीति आयोग गवर्नमेंट आफ इंडिया नई दिल्ली, प्रोफेसर हिमांशु अग्रवाल कॉलेज मेरठ, डॉक्टर किरण लता डंगवाल लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ ने अपने विचार रखें तथा उन्होंने शोध पत्र पड़े कार्यक्रम में दो टेक्निकल सेशन हुए जिसमें उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान से आए हुए शोधार्थियों ने अपने-अपने शोध पत्र पड़े उसके उपरांत एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया कार्यक्रम की संयोजन प्रोफेसर रीना चंद्र ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन से विद्यार्थियों के साथ-साथ शोधार्थियों को भी लाभ मिलेगा आयोजक सचिव डॉक्टर हरिओम शंकर ने कहा की इस तरह के राष्ट्रीय सेमिनार में विद्यार्थियों को तो सीखने को मिलता ही है साथ ही इसके उपरांत जो निष्कर्ष निकलता है उसको लेकर भी एक प्रोसिडिंग प्रकाशित की जा रही है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े लोगों के लिए बहुत लाभकारी होगी। कार्यक्रम में शोध सारांश की एक सोवियर का विमोचन भी अतिथि द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर ओपी कुलश्रेष्ठ पूर्व प्राचार्य डीबीएस कॉलेज प्रोफेसर एन एल गुप्ता पूर्व प्राचार्य डी ए वी कॉलेज, प्रोफेसर डी एन भटकती , प्रोफेसर आरके मेहता, प्रो के आर जैन, प्रोफेसर डीके त्यागी प्रोफेसर अनुपम सक्सैना डॉ.सुमन त्रिपाठी डॉक्टर अमिता श्रीवास्तव डॉक्टर रवि दीक्षित,प्रोफेसर गीतांजलि तिवारी डॉ सविता चौहान्याल, प्रोफेसर वीना जोशी डॉक्टर अर्चना पाल डॉक्टर रीना उनियाल तिवारी प्रोफेसर रेखा त्रिवेदी डॉक्टर राम विनय सिंह डॉक्टर पुनीत सक्सेना, डॉक्टर सत्यम , डॉ एम एम एस जससल डॉक्टर उर्मिला रावत डॉक्टर गोविंद राम, मेजर अतुल सिंह आदि उपस्थित रहे।

शीतकाल चारधाम यात्रा शुरू: धार्मिक पर्यटन में मील का पत्थर

●राज्य की सांस्कृतिक और आर्थिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी

संवाददाता

देहरादून। धार्मिक पर्यटन और आर्थिक विकास को बढ़ाने के उद्देश्य से एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भगवान केदारनाथ के शीतकालीन गद्दीस्थल उखीमठ के ओंकारेश्वर मंदिर में शीतकालीन चार धाम यात्रा का उद्घाटन किया।

औपचारिक शुभारंभ पारंपरिक प्रार्थनाओं और अनुष्ठानों के साथ हुआ, जो तीर्थयात्रा की आधिकारिक शुरुआत का प्रतीक है जो अब पूरे साल जारी रहेगी, जो राज्य की सांस्कृतिक और आर्थिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी। रुद्रप्रयाग जिले के अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान, सीएम धामी ने दूसरे दिन चार धाम यात्रा को साल भर चलने वाला धार्मिक सर्किट बनाने की लंबे समय से चली आ रही मांग को संबोधित करते हुए घोषणा की। परंपरागत रूप से, यात्रा सर्दियों के महीनों के

दौरान बंद हो जाती थी जब हिमालय के मंदिर बर्फ के कारण दुर्गम हो जाते थे। इस पहल के साथ, देवताओं के शीतकालीन निवास, केदारनाथ में ओंकारेश्वर मंदिर, और बद्रीनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री में अन्य निर्दिष्ट स्थान अब ठंड के महीनों के दौरान तीर्थयात्रियों की मेजबानी करेंगे। इस कार्यक्रम में बोलते हुए, सीएम धामी ने कहा, ₹शीतकालीन चार धाम यात्रा उत्तराखंड को साल भर तीर्थस्थल के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

हम इस पहल की सफलता सुनिश्चित करने के लिए सभी व्यवस्थाओं पर बारीकी से नजर रख रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इससे न केवल हमारे राज्य का धार्मिक महत्व मजबूत होगा, बल्कि स्थानीय समुदायों को आजीविका का एक सतत स्रोत भी मिलेगा।

शीतकालीन चार धाम यात्रा से देश-विदेश से तीर्थयात्रियों के आने की उम्मीद है, जिससे ऑफ-सीजन में भी पर्यटन को बढ़ावा मिलने से उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे, जिनमें रुद्रप्रयाग विधायक भरत सिंह चौधरी, केदारनाथ विधायक आशा नौटियाल, बीकेटीसी (बद्री-केदार मंदिर समिति) के अध्यक्ष अजेंद्र अजय, भाजपा जिला अध्यक्ष महावीर पंवार, मंदिर के पुजारी और बड़ी संख्या में स्थानीय निवासी शामिल थे।

12 महीने की तीर्थयात्रा की सुविधा प्रदान कर-के, इस पहल का उद्देश्य परंपरा, आध्यात्मिकता और आर्थिक स्थिरता के बीच संतुलन बनाना है, तथा राज्य की देवभूमि के रूप में पहचान को मजबूत करना है।

संपादकीय

शिक्षाविद स्व. वीरेंद्र स्वरूप जी का शिक्षा के नवनिर्माण में योगदान

डी .ए. वी महाविद्यालय के दीनदयाल सभागार में प्रख्यात शिक्षाविद व हमारे संस्थान के पूर्व सचिव श्रद्धेय स्व0 वीरेंद्र स्वरूप जी की पुण्य तिथि के अवसर पर उनकी पावन स्मृति में स्वरांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संगीत विभाग की छात्र-छात्राओं द्वारा बेहतरीन प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम को गरिमा प्रदान करते हुए श्रद्धेय वीरेंद्र स्वरूप जी के प्रति अपनी भावांजलि समर्पित की गई। इस अवसर पर कॉलेज के प्राचार्य प्रो. सुनील कुमार, ने अपने उद्बोधन में स्वर्गीय वीरेंद्र स्वरूप जी के योगदान को याद किया। प्रबंध तंत्र के अध्यक्ष प्रोफेसर आरके मेहता ने शिक्षा के क्षेत्र में उनके चिंतन से सभी को अवगत कराया, सदस्य डॉ. रंधावा तथा नारंग जी भी उपस्थित रहे। पूर्व प्राचार्य डॉ. आई पी सक्सेना, डॉ अशोक श्रीवास्तव, डॉ एस वी त्यागी, डॉ विनीत विश्नोई, डॉ आर के शर्मा, कार्यक्रम संयोजिका प्रोफेसर अनुपमा सक्सैना, मुख्य नियंता डॉ राजेश पाल, डॉ हरी ओम शंकर, प्रोफेसर सुमन त्रिपाठी, डॉ अमिता श्रीवास्तव, डॉ यू एस राणा, डॉ वी के पंकज, डॉ अनूप मिश्रा, डॉ विवेक त्यागी, प्रो आर बी पाण्डेय, डॉ अतुल सिंह, डॉ प्रशांत सिंह, डॉ अनिल पाल डॉ राजेश रावत, डॉ पुष्पेंद्र कुमार , डॉ पीयूष मिश्रा, डॉ पुनीत , डॉ निशा प्रो रीना चंद्रा , डॉ सौरभ शर्मा आदि कॉलेज के अन्य शिक्षक शिक्षिकाएं, कॉलेज के छात्र संघ अध्यक्ष सिद्धार्थ अग्रवाल, श्री राजकुमार, श्री डिंपल तथा अन्य छात्र छात्राएं और कॉलेज के कर्मचारी गण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर राम विनय सिंह ने किया। कार्यक्रम मे धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक प्रोफेसर अनुपमा सक्सैना द्वारा किया गया।

डॉ रवि शरण दीक्षित

ग्रामीण भारत के स्कूलों की सशक्तिकरण आवश्यक : अपूर्वा

देहरादून। डीएवी महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा करियर में संभावनाएं तथा रोजगार के फिनलैंड में मोका पर एक वार्ता का आयोजन किया गया ।

इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता अपूर्व हुड्डा थी जो यूनिवर्सिटी आफ जयवास्कीला, फिनलैंड में शिक्षक और शोधकर्ता है। उन्होंने भारत में शिक्षिका के रूप में काम किया है, कार्यक्रमों की प्रबंधक के रूप में है वह वर्तमान में ग्रामीण भारत में कम आय वर्ग स्कूल समुदाय के सशक्तिकरण के लिए शोध कार्य करके कर रही हैं । इसके साथ उन्होंने शिक्षा में उद्यमशीलता, तथा करियर की संभावनाओं पर चर्चा की । इस अवसर पर विभाग की विभागीय अध्यक्ष प्रोफेसर रंजना रावत, प्रोफेसर अंजू बाली, डॉ रवि शरण उपस्थित रहे।

YOUTH EXCHANGE PROGRAMME NEPAL-2024

In NCC, a cadet gets many opportunities to be seen, be heard,
earn a name, prove themselves to not be the use-less fellow their father
thinks they are, or the not-so-famous guy their younger siblings thought
they were at school. In NCC, every cadet has a chance, and a right to be a
winner that they actually are!
One such opportunity is known as the Youth Exchange
Programme, abbr. YEP, which gives a cadet a chance to repre-sent the
nation as the ambassador of India in a foreign nation. I was one of the 100
cadets who got the opportunity to represent India to the world.
It all started with a list, a delega-tion list which had my regimental number and name on it, along with 15 other cadets who were delegated to
Nepal. The preparations began, documentation, clothing, expenses, etc.
After a short span, I reached the gates of DGNCC on 12th of October, 2024
and was introduced to the boys of the delegation. After half an hour, I met
the girls during lunch, and we all made acquain-tance, including the
delegation leader and the deputy delegation leader. We had to stay in
DGNCC for 9 days, mainly to practice a culture programme to show in
Nepal, and a presentation on India. 9 days went by, and next thing I knew, I
was at the airport, checking in my luggage. 3 hours later, we were in
Kathmandu where we checked into our hotel, had lunch and more or less,
rested, preparing for the upcoming day.
Next began our D+1 day in Nepal, where we went to the DGNCC
Nepal office for the induction, following which we had an induction with the
DGNCC of Nepal, who wholeheartedly welcomed us to their country. We
had 9 days of full adventure, which included:
1. Darshan of PashupatiNath Mandir
2. Chitwan Hills, from where we can view the entire Kathmandu Valley
3. Bhaleshwar Mahadev temple at the top of the Chitwan Hills
4. Sunset at Rapti River
5. Jungle Safari
6. Canoeing at Rapti River
7. Tharu Cultural Night at Tharu Village
8. Ghariyal Breeding Centre
9. Elephant Breeding Centre
10. Marsyangdi Hydropower Station
11. Rafting at Trishuli River
12. Kathmandu Durbar Square
The most blessed we felt was when we witnessed Kumari Devi, the
living goddess!
How and when these 9 days passed, we had no idea. It felt like one
day I entered the gates of DGNCC, the next I was leaving the place.
The goodbyes were the hardest part of the YEP. The event still
makes me nostalgic, and this was the opportunity for which I will
thank NCC my entire life!

SUO Dhruv Panwar
UK/22/SD/A/100039
D.A.V. (P.G.) College

डीएवी महाविद्यालय में महिला स्वास्थ्य सशक्तिकरण के लिए प्रयास की पहल

संवाददाता

देहरादून।अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर डी.ए.वी महाविद्यालय की कम्युनिटी आउटरीच सैल प्रयास, बालिका वाहिनी एन.सी.सी एवं संगीत विभाग ने गंगा प्रेम हॉस्पिस, ऋषिकेश के साथ मिलकर महिला स्वास्थ्य सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक महिला स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम में गंगा प्रेम हॉस्पिस, ऋषिकेश से आई डॉक्टर कैमिलो मुनरो ने पैलिएटिव केयर की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता से छात्राओं को जागरूक किया । नर्सिंग ऑफिसर, सिस्टर सुमन ने स्तन कैंसर, सर्वाइकल कैंसर तथा अन्य स्त्री रोग संबंधी दुविधाओं के संबंध में छात्राओं से चर्चा की एवं महिला स्वास्थ्य के प्रति उन्हें जागरूक किया। छात्राओं ने चर्चा में बढ़-चढ़कर का प्रतिभाग किया एवं अपने संशय दूर किये। यह कार्यक्रम आज के दिवस के अनुरूप प्रासंगिक और महिलाओं की आवश्यकताओं को समझने का कम्युनिटी आउटरीच सेल प्रयास का एक सफल प्रयास रहा।

इस अवसर पर प्राचार्य, प्रोफेसर सुनील कुमार ने सभी छात्राओं एवं महिला कर्मियों को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं दी तथा विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कम्युनिटी आउटरीच सेल की संयोजिका, डॉक्टर सुमन त्रिपाठी उप संयोजिका प्रोफेसर मृदुला शर्मा, संगीत विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर अनुपमा सक्सेना एन.सी.सी ऑफिसर, लेफ्टिनेंट, अर्चना पाल तथा प्रयास की पूर्व संयोजिका डॉक्टर बीना जोशी तथा अन्य सदस्य, डॉक्टर सविता चौनियाल, डॉक्टर अमिता श्रीवास्तव इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में प्रोफेसर गीतांजलि तिवारी ने अपना अमूल्य योगदान दिया। इस कार्यक्रम का लाभ सभी शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने उठाया एवं अपने मस्तिष्क में उपस्थित सवालों का समाधान भी प्राप्त किया। अंत में कला संकाय की डीन, प्रोफेसर देवना जिंदल ने सभी उपस्थित महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं एवं बधाई दी एवं कम्युनिटी आउटरीच सेल प्रयास की संयोजिका डॉ सुमन त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

महाविद्यालय द्वारा कैंसर एवं पैलिएटिव केयर पर जागरूकता के लिए फ्लैश मोब

संवाददाता

देहरादून। कैंसर एवं पैलिएटिव केयर के प्रति आमजन को जागरूक करने के लिए डी.ए.वी महाविद्यालय के कम्युनिटी आउटरीच सेल एवं एन.सी.सी बालिका वाहिनी ने देहरादून के प्रसिद्ध सेंट्रियो मॉल में एक फ्लैश मौब का आयोजन किया। यह जागरूकता अभियान गंगा प्रेम हौस्पिस, ऋषिकेश के साथ हुए एमओयू के अंतर्गत आयोजित किया गया।

आम जन को एकत्रित करने के लिए सबसे पहले महाविद्यालय के छात्रों ने पर्यावरण एवं उत्तराखंड के संरक्षण पर एक नृत्य प्रस्तुत किया। नृत्य के माध्यम से उत्तराखंड की जैविक संपदा के नष्ट हो जाने के प्रति आमजन को जागरूक किया गया। नृत्य ने आमजन को आकर्षित किया, तत्पश्चात पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए एक नृत्य नाटिका का मंचन भी किया गया । अंत में छात्रों ने कैंसर के प्रति जागरूक करने के लिए एक नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया ।

इस नाटक के द्वारा गंगा प्रेम हौसपिस द्वारा लाइलाज हो चुके कैंसर रोगियों को दी जाने वाली पैलिएटिव केयर, सहायता एवं देखभाल की जानकारी उपलब्ध कराई गई ।इस नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मासिक कैंसर शिविर की जागरूकता भी उपलब्ध कराई गई।

फ्लैशमोब का आयोजन कम्युनिटी आउटरीच सेल की संयोजिका डॉ बीना जोशी एवं सेल के अन्य सदस्यों डॉक्टर मृदुला शर्मा, डॉ सुमन त्रिपाठी एवं एन.सी.सी की एसोसिएट एन.सी.सी ऑफिसर लेफ्टिनेंट अर्चना पाल के निर्देशन में किया गया। इस अवसर पर गंगा प्रेम हौसपिस ऋषिकेश से सोशल ऑफीसर श्रीमती अंजिता एवं एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर श्री राधे हरि एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

कॉलेज के पूर्व छात्र भारत कुकरेती फिल्मी जगत में अपनी चमक बिखेर रहे हैं

भारत कुकरेती मनोरंजन मीडिया उद्योग के एक अनुभवी हैं, जिन्होंने कॉमेडी सर्कस, कॉमेडी नाइट्स विद कपिल और द कपिल शर्मा शो जैसे रास्ता बदलने वाले टेलीविजन शो पर रचनात्मक भूमिका निभाई है।

एक उत्साही लेखक और निर्देशक के रूप में वह उपरोक्त शो के रचनात्मक और कंटेंट प्रमुख रहे हैं और भारत के कुछ सबसे बड़े कार्यक्रमों जैसे फिल्मफेयर पुरस्कार, स्टार स्क्रीन पुरस्कार, प्रोड्यूसर्स गिल्ड पुरस्कार, स्टार परिणार पुरस्कार, जी रिश्ते पुरस्कार आदि की स्क्रिप्ट लिखी है। उन्हें लगातार 3 वर्ष तक सर्वश्रेष्ठ निर्देशक-कॉमेडी के लिए आईटीए पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।भारत कुकरेती मनोरंजन मीडिया में अपनी यात्रा की शुरूआत एक लेखक के रूप में की, और पिछले 15 वर्षों से भारतीय टेलीविजन के सबसे सफल गैर-काल्पनिक कॉमेडी शो के लिए सामग्री मोर्चे का नेतृत्व किया । किसी भी औपचारिक प्रशिक्षण के बिना टेलीविजन उद्योग में प्रवेश करने के बाद, कुछ पथप्रदर्शक शो लिखने और निर्देशित किया और इस प्रक्रिया में कई आइकॉनिक किरदारों का निर्माण किया है जो आज भारत में हर घर में जाने जाते हैं। भारत कुकरेती एक टेलीविजन घटनाओं का अनुभवी भी है। जिन्होंने फि ल्मफेयर अवाड्र्स, स्टार स्क्रीन अवाड्र्स, भारतीय उत्पादक गिल्ड अवाड्र्स, स्टार परिवार अवाड्र्स, जी रिश्ते अवाड्र्स, भारतीय टेलीविजन अकादमी अवाड्र्स और गोल्ड अवाड्र्स जैसे सबसे बड़े आयोजनों के लिए कई बार सामग्री तैयार की है।

राज्य में पर्यटन की दृष्टि से चयनित गांवों के विकास के लिए टास्क फोर्स गठित

आयुष, वेलनेस, कृषि पर्यटन, विरासत की दृष्टि से चयनित किए गए हैं 18 गांव

संवाददाता

देहरादूनः ग्रामीण पर्यटन पर केंद्र सरकार विशेष जोर दे रही है और अब पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण उत्तराखंड ने भी इस दिशा में कदम बढ़ाए हैं। राज्य में पहली बार आयुष, वेलनेस, कृषि, विरासत जैसे क्षेत्रों में पर्यटन के लिए 18 गांव चयनित किए गए हैं। इन्हें पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के लिए टास्क फोर्स गठित की जाएगी। इसमें क्षेत्रवार संबंधित विभाग की मुख्य भूमिका रहेगी, जबकि अन्य विभाग उसके साथ सहयोगी के तौर पर योगदान देंगे। इन गांवों में होमस्टे की पहल को भी बढ़ावा दिया जाएगा, ताकि वहां पहुंचने वाले सैलानियों को रहने की दिक्कत न हो।

राज्य में गांवों को पर्यटन से जोडने के उद्देश्य से कसरत वर्ष 2022 से चल रही है। इस कड़ी में पूर्व में कुछ गांवों में पर्यटन की दृष्टि से कदम उठाए गए थे, जिन्हें सराहना भी मिली। वर्ष 2023 में मुनस्यारी के सरमोली गांव का बेस्ट रूरल टूरिज्म का पुरस्कार मिला था। इस वर्ष श्रेष्ठ पर्यटन गांवों की श्रेणी में जखोल (उत्तरकाशी) को साहसिक पर्यटन, सुप्पी (बागेश्वर) को कृषि पर्यटन और गुंजी व हर्षिल को वाइब्रेट विलेज श्रेणी में केंद्र सरकार ने पुरस्कृत किया था।

इससे उत्साहित सरकार ने अब राज्य में क्षेत्रवार पर्यटन ग्राम चयनित किए हैं। इनमें संबंधित क्षेत्र को बढ़ावा देने के साथ ही ट्रेकिग मार्ग, होम स्टे जैसे कदम उठाए जाएंगे। इस सबके दृष्टिगत इन चयनित 18 गांवों के लिए टास्क फोर्स गठित की
जा रही है। उदाहरण के तौर पर देखें तो घेस गांव को आयुष पर्यटन के लिए विकसित किया जाना है। वहां होने वाले विकास कार्यों में आयुष विभाग मुख्य भूमिका में रहेगा, जबकि अन्य विभाग उसके सहयोगी के तौर पर कार्य करेंगे। टास्क फोर्स में इन विभागों के अधिकारी शामिल किए जाएंगे। इसी तरह की पहल अन्य क्षेत्रवार चयनित गांवों के लिए की जाएगी।

पर्यटन की दृष्टि से चयनित उत्कृष्ट गांव

जिला	गांव	क्षेत्र
पिथौरागढ़	मदकोट	वेलनेस
पिथौरागढ़	गुंजी	वाइब्रेंट विलेज
अल्मोड़ा	माट (कसार देवी)	वेलनेस
बागेश्वर	लिति	समुदाय आधारित कृषि व साहसिक
चंपावत	श्यामताल व प्रेमनगर	वेलनेस व कृषि पर्यटन
चमोली	घेस	कृषि व साहसिक
चमोली	माणा	वाइब्रेंट विलेज व हस्तशिल्प
नैनीताल	पियोरा	वेलनेस व हस्तशिल्प
नैनीताल	छोटी हल्द्वानी (जिम कार्बेट गांव)	विरासत
टिहरी	सौड़	समुदाय आधारित व साहसिक
पौड़ी	सिरसू	साहसिक
उत्तरकाशी	जखोल	कृषि व साहसिक
उत्तरकाशी	बगोरी	वाइब्रेंट विलेज
देहरादून	लाखामंडल	विरासत, अध्यात्म व वेलनेस
देहरादून	थानो	वेलनेस
रुद्रप्रयाग	घिमतोली	अध्यात्म व वेलनेस
रुद्रप्रयाग	सारी	वेलनेस व साहसिक

NCC DAY CELEBRATION

A 2-6 guard was given to the ADG Uttarakhand, Maj. Gen. Atul Rawat, AVSM, on the occasion of NCC day celebration 2024, by the cadets of 29 UK BN NCC, at the Uttarakhand Directorate, Dehradun. The guard commander, SUO Kamal Singh, was appreciated and felicitated by the ADG. The guard consisted of the following:

1. SUO Kamal Singh (Guard Commander)
2. Cdt Nikhil Pushpwan (Sentry)
3. Cdt Vivek Vaidwan
4. Cdt Ram
5. Cdt Manish Singh
6. Cdt Kshitij Rai
7. Cdt Kabir Yadav
8. Cdt Pankaj Pandyar

Additionally, 2 cadets acted as the pilots for the ADG:

1. Cdt Ayush Chaudhary
2. Cdt Piyush Thapa

Maj. Ajay Kumar of the Ordinance Corps, an ex-cadet of DAV NCC, was also present at the occasion. He currently works logistics in the Directorate. An interaction with him inspired the cadets to join the Indian Army as an officer, making the nation proud.

स्वर्गीय श्रीमती कमला बहुगुणा की स्मृति में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन, महिलाओं के आरक्षण और लैंगिक समानता पर चर्चा

संवाददाता

देहरादून। प्रतिष्ठित महिला नेत्री स्वर्गीय श्रीमती कमला बहुगुणा जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर, डीएवी (पीजी) कॉलेज, देहरादून में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के छात्र छात्राओ ने क्या भारत में महिलाओं को आरक्षण देने से वास्तव में लैंगिक समानता प्राप्त हो सकती है विषय पर चर्चा की और अपने विचार रखे।

यह कार्यक्रम डीएवी कॉलेज के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के तत्वावधान में आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य श्रीमती कमला बहुगुणा की विरासत का सम्मान करना था। स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान और महिला अधिकारों के प्रति उनके अटूट समर्पण के लिए कमला जी आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं। यह वाद-विवाद प्रतियोगिता उनकी सामाजिक न्याय और समता के प्रति प्रतिबद्धता को श्रद्धांजलि देने का एक उचित माध्यम था।

कार्यक्रम की शुरूआत IQAC के समन्वयक डॉ ओनिमा शर्मा के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने श्रीमती कमला बहुगुणा जी की विरासत और महिलाओं के नेतृत्व पर उनके प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रतिभागियों को सच्ची लैंगिक समानता की प्राप्ति के संदर्भ में महिलाओं के आरक्षण के महत्व पर चर्चा करने का आग्रह किया और कमला जी की साहसी और प्रगतिशील भावना को आत्मसात करने की प्रेरणा दी।इस अवसर पर महाविद्यालय के उपप्राचार्य प्रो एसपी जोशी ने भी अपनी बातें साझा की। उन्होंने कहा कि महिलाएं राष्ट्र निर्माण में अभूतपूव भूमिका निभा रही हैं, और उनकी पूरी भागीदारी के बिना वास्तविक समानता का सपना अधूरा है।

इस वाद-विवाद का केंद्र यह था कि क्या भारत में महिलाओं के लिए आरक्षण वास्तव में लैंगिक समानता प्राप्त कर सकता है या क्या एक समान समाज के निर्माण के लिए अतिरिक्त कदम उठाने की आवश्यकता है। प्रतिभागियों ने इस मुद्दे के विभिन्न पहलुओं पर विचार प्रस्तुत किए। कुछ ने ऐतिहासिक अन्याय को दूर करने और महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने में आरक्षण नीतियों के लाभों पर जोर दिया, जबकि अन्य ने सच्ची समानता प्राप्त करने की जटिलताओं पर भी प्रकाश डाला। विचारों का यह जीवंत आदान-प्रदान युवाओं की समर्पित भावना को प्रतिबिंबित करता है, जो समावेशी समाज के निर्माण के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

प्रतियोगिता का समापन विजेताओं की घोषणा के साथ हुआ, जिन्हें उनकी प्रभावी प्रस्तुति और विचारशील योगदान के लिए आकर्षक ट्रॉफी एवं सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया।

विजेताओं ने विषय पर अपनी गहरी समझ और विश्लेषणात्मक कौशल का प्रदर्शन किया, जिसने निर्णायक मंडल और दर्शकों दोनों पर एक प्रभावी छाप छोड़ा। यह वाद-विवाद प्रतियोगिता समाज के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की आवाज को सम्मान और प्रतिनिधित्व देने की आवश्यकता की एक सशक्त याद दिलाने वाला था। आयोजन समिति ने सभी प्रतिभागियों, शिक्षकों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस कार्यक्रम को एक यादगार श्रद्धांजलि में परिवर्तित किया।

कार्यक्रम में उप प्राचार्य प्रो. एस पी जोशी, डॉ ओनिमा शर्मा, प्रो अंजू बाली पाण्डेय , डॉ उषा पाठक , डॉ नैना श्रीवास्तव,डॉ ज्योति सेंगर, डॉ विनीत विश्नोई, डॉरविदीक्षितएवं मंत्रणा सोसाइटी के छात्र छात्राए आदि उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण कोर्स का किया गया आयोजन

संवाददाता

देहरादून।सरवाइवल इन अनफरेबल कंडीशन SAURIVAL IN UNFAVOURABLE CONDITION (SUC) प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन प्रादेशिक कैपिंग सेंटर भोपालपानी देहरादून में आयोजित हुआ। जिसमें डी.ए.वी. (पी जी) कॉलेज देहरादून से रेंजर प्रिया द्वारा प्रतिभाग किया गया। कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर सुनील कुमार तथा भारत स्काउट एंड गाइड की रेंजर लीडर डॉ निशा वालिया ने आज प्रिया को सम्मानित किया।

डीएवी महाविद्यालय में कैंसर एवं नशा मुक्ति के लिए नुक्कड़ नाटक

संवाददाता

देहरादून। डी.ए.वी महाविद्यालय में कैंसर एवं नशा मुक्ति के प्रति आमजन को जागरूक करने के लिए नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया। यह जागरूकता अभियान गंगा प्रेम हौस्पिस, ऋषिकेश के साथ हुए एम.ओ.यू. के अंतर्गत आम जन को कैंसर के प्रति जागरूक करने के लिए किया गया। नुक्कड़ नाटक डी.ए.वी महाविद्यालय के कम्युनिटी आउटरीच सेल एवं एन. सी. सी. बालिका वाहिनी ने आइ.क्यू.ए.सी के साथ मिलकर किया। नुक्कड़ नाटक महाविद्यालय की एन.सी.सी बालिका वाहिनी ने महाविद्यालय के निकट स्थान डी.ए.वी रोड, करनपुर पर किया । नाटक सीनियर

अंडर ऑफिसर प्राची पांडे की अध्यक्षता में कम्युनिटी आउटरीच सेल की संयोजिका, डॉक्टर बीना जोशी के निर्देशन तथा लेफ्टिनेंट अर्चना पाल की सहायता से किया गया।

कैडेट्स ने कलात्मक तरीके से गुटखा तंबाकू आदि के सेवन से होने वाले कैंसर रोग की जागरूकता का प्रसार किया तथा साथ ही नशे से होने वाले दुष्परिणामों तथा गंगा प्रेम हौस्पिस ऋषिकेश द्वारा कैंसर रोगियों को दी जाने वाली पहलिएटिव केयर की जानकारी के बारे में आमजन एवं महाविद्यालय के छात्रों को जागरूक किया। इस अवसर पर गंगा प्रेम हौस्पिस, ऋषिकेश से मेडिकल सोशल ऑफिसर श्रीमती अंजिता एवं एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर श्री हरे कृष्णा भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम को आयोजित करने में डी.ए.वी महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर सुनील कुमार सहित कम्युनिटी आउटरीच सेल की सहसंयोजीका, डॉक्टर सुमन त्रिपाठी, प्रोफेसर मृदुला सेनगर शर्मा, प्रोफेसर अनुपमा सक्सेना आदि ने सहयोग दिया।

कैंसर पीड़ित व्यक्तियों का मनोबल बढ़ाने का प्रयास

संवाददाता

देहरादून। डीएवी महाविद्यालय की कम्युनिटी आउटरीच सेल, एन.सी.सी बालिका वाहिनी एवं संगीत विभाग के द्वारा ऋषिकेश स्थित गंगा प्रेम हौस्पिस में कैंसर से पीड़ित जीवन के अंतिम काल में जीवन यापन कर रहे व्यक्तियों के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत किया। यह कार्यक्रम कैंसर पीड़ित व्यक्तियों के मनोबल को बढ़ाने का एक प्रयास था । इस कार्यक्रम में संगीत विभाग के द्वारा भजन एवं गीत प्रस्तुत किए गए एवं 11 यू के एन.सी.सी वाहिनी द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। हौस्पिस के कार्यकताओं ने महाविद्यालय के छात्रों को अंतिम सांस ले रहे व्यक्तियों की आवश्यकताओं के बारे में जागरूक किया एवं हौस्पिस के अस्तित्व की आवश्यकता के बारे में ज्ञानवर्धन किया। गंगा प्रेम हौस्पिस, राजीव गांधी कैंसर

अस्पताल के चिकित्सक डॉक्टर दीवान एवं नानी मां का एक सफल प्रयास है । गंगा प्रेम हौस्पिस माह के अंतिम रविवार को कैंसर जागरूकता शिविर का आयोजन भी करता है, जिसमें दिल्ली के राजीव गांधी कैंसर अस्पताल से डॉक्टर दीवान स्वयं आकर मरीजों का परीक्षण करते हैं।

महाविद्यालय के छात्रों ने हौस्पिस में रह रहे ला इलाज हो चुके कैंसर पीड़ित व्यक्तियों का मनोबल बढ़ाने के लिए कुछ खेलों का आयोजन भी किया जिसमें मरीज ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया।

इस कार्यक्रम का प्रारूप कम्युनिटी आउटरीज सेल की संयोजिका डॉक्टर बीना जोशी ने तैयार किया, एवं संगीत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ अनुपमा सक्सेना एवं डॉक्टर सुमन त्रिपाठी के साथ एनसीसी ऑफिसर लेफ्टिनेंट अर्चना पाल ने सहयोग किया। कार्यक्रम के आयोजन में महाविद्यालय के संगीत विभाग एवं एन.सी.सी बालिका वाहिनी के छात्रों ने अपनी प्रस्तुति देकर कार्यक्रम के सफल आयोजन में अपनी भूमिका निभाई।

वाद विवाद, काव्य पाठ, कहानी लेखन एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

संवाददाता

देहराजून। डी ए वी पीजी कॉलेज देहरादून में राजभाषा प्रकोष्ठ एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के तत्वाधान में हिंदी दिवस के उपलक्ष में वाद विवाद, काव्य पाठ, कहानी लेखन एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वाद विवाद प्रतियोगिता का विषय आधुनिकता हिंदी भाषा के संरक्षण और विकास में बाधक सिद्ध हो रही है या सहायक इस विषय के पक्ष और विपक्ष में छात्र-छात्राओं ने अपने सटीक विचार रखकर हिंदी की महिमा का मंडन किया।

वाद विवाद प्रतियोगिता में
प्रथम- भारत भूषण पुरोहित
द्वितीय- दिव्या चमोली
तृतीय- वैभव तिवारी
ने पुरस्कार प्राप्त किया।

निर्णायक सदस्यों के रूप में प्रोफेसर राखी उपाध्याय, प्रोफेसर नीरजा चौधरी, प्रोफेसर पूनम मिश्रा ने अपना अमूल्य योगदान दिया। इस अवसर पर प्रोफेसर राखी उपाध्याय ने अपने वक्तव्य में कहा कि आधुनिकता किसी भी प्रकार से बाधक नहीं है, भाषा राष्ट्र की एकता अखंडता तथा प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है आज दुनिया के 175 से ज्यादा विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का अध्ययन कराया जा रहा है क्योंकि हिंदी भाषा की शब्द संपदा विपुल एवं विराट है, इसके अंदर वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियां भरी हुई है साथ ही वैश्विक मीडिया में इसका प्रभावी हस्तक्षेप है। हिंदी विश्व चेतना की संवाहिका है इसमें विश्व बंधुत्व, विश्व मैत्री एवं विश्व कल्याण की भावना भरी है, काव्य पाठ प्रतियोगिता में गौरी चौधरी प्रथम, मेघा थापा द्वितीय तथा मुस्कान कनौजिया ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

निबंध प्रतियोगिता में गार्गी थपलियाल ने प्रथम, महिमा पाल ने द्वितीय तथा अक्षत सिंह ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

कहानी लेखन प्रतियोगिता में दीक्षा ने प्रथम, अंकिता ने द्वितीय तथा सानिया शर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में महाविद्यालय में सचिन चौहान ने मसूरी स्थित लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासक अकादमी के निदेशक पद से सेवानिवृत हुए संजीव चोपड़ा की पुस्तक का हम भारत के राज्यों के लोग शीर्षक से हिंदी अनुवाद किया उसके इस सराहनीय कार्य के लिए राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया। प्राचार्य प्रोफेसर सुनील कुमार ने सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए भविष्य के लिए शुभ आशीर्वाद दिया कार्यक्रम के अंत में राजभाषा प्रकोष्ठ संयोजक डॉ निशा वालिया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस कार्यक्रम में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन की समन्वयक डॉ ओनिमा शर्मा, उप प्राचार्य प्रोफेसर एसपी जोशी, डॉ नैना श्रीवास्तव, डॉ शैली गुप्ता, डॉ विनीत विश्नोई, डॉ ऊषा पाठक अनन्या कुमार, सुप्रिया मलिक, पलक राणा, कोमल पुंडीर, तानिया सिंह, अभय राजपूत पार्थ कोहली, सुधांशु सिंह, हिमानी पाल, वैभव तिवारी, अनंत थापा, मेघा शर्मा, अनामिका बुटोला,

अंश मुयाल, दिव्या चमोली, देवांश सिंह रावल, महक भंडारी, खुशी, दीक्षा, मेघा थापा, भारत भूषण पुरोहित, नवप्रीत, दीपा, आदित्य सिंह, तुषार, तनुज, आरती नौटियाल, सुधांशु, महक, पूजा, अंजलि, पल्लवी, सपना, मोहित, शिवानी आदि छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय खेल : उत्तराखंड ने 121 पदक जीता

सर्विसेज ने 121 पदक - 68 स्वर्ण, 26 रजत और 27 कांस्य के साथ नेशनल गेम्स 2025 का खिताब जीता। महाराष्ट्र 201 पदक जीतने के बावजूद 54 स्वर्ण के साथ दूसरे स्थान पर रहा।

संवाददाता

देहरादून। सर्विसेज स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड (एसएससीबी) ने उत्तराखंड में नेशनल गेम्स 2025 में कुल 121 पदक जीतकर खिताब अपने नाम किया, जिनमें 68 स्वर्ण, 26 रजत और 27 कांस्य पदक शामिल जीते।

इनमें से तीन स्वर्ण सहित नौ पदक गुरुवार को प्रतियोगिता के आखिरी दिन जीते।

ओलंपिक से प्रेरित भारत का अपना मल्टी-स्पोर्ट इवेंट नेशनल गेम्स के 38वें संस्करण में 28 राज्यों, आठ केंद्र शासित प्रदेशों और सेवा खेल नियंत्रण बोर्ड (एसएससीबी) के एथलीट 32 विभिन्न खेलों में पदक के लिए प्रतिस्पर्धा की।

मलखंब और योगासन को शुरूआत में प्रदर्शन कार्यक्रम के रूप में घोषित किया गया था, लेकिन बाद में इसे पूर्ण पदक वाले खेलों में अपग्रेड कर दिया गया।

महाराष्ट्र, जिसने 2023 में आयोजित पिछले संस्करण में राजा भलिंदर सिंह ट्रॉफी जीती थी, 198 पदक - 54 स्वर्ण, 71 रजत और 73 कांस्य के साथ दूसरे स्थान पर रहा।

2025 के राष्ट्रीय खेल 26 जनवरी को ट्रायथलॉन स्पधाओं के साथ शुरू हुए। राष्ट्रीय खेलों में खेल प्रतियोगिताएं 13 फरवरी को समाप्त हुईं।

1985 में खेलों की शुरूआत के बाद से सेना के जवानों की एक टीम - सर्विसेज, सबसे अधिक चार बार नेशनल गेम्स चैंपियन बनकर उभरी है। वर्तमान में महाराष्ट्र तीन बार की विजेता टीम है।

राष्ट्रीय खेल 2025 में भारत के कुछ शीर्ष एथलीट शामिल हो हुए, जिनमें ओलंपिक पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन (मुक्केबाजी), स्वप्निल कुसाले, सरबजोत सिंह और विजय कुमार (शूटिंग) शामिल थे।

तजिंदरपाल सिंह तूर (शॉट पुट), पारुल चौधरी (3000 मीटर स्टीपलचेज), ज्योति याराजी (100 मीटर बाधा दौड़) और अमोज जैकब (400 मीटर) एथलेटिक्स स्पधाओं में कुछ अन्य बड़े नाम थे।

यहां राष्ट्रीय खेल 2025 पदक तालिका दी गई है।

रैंक	राज्य/केंद्र शासित राज्य/टीम	गोल्ड	सिल्वर	ब्रॉन्ज	कुल
1	सर्विसेज स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड	68	26	27	121
2	महाराष्ट्र	54	71	76	201
3	हरियाणा	48	46	57	153
4	कर्नाटक	34	18	28	80
5	मध्य प्रदेश	33	26	23	82
6	तमिलनाडु	27	30	35	92
7	उत्तराखंड	24	35	44	103
8	पश्चिम बंगाल	16	13	18	47
9	पंजाब	15	20	31	66
10	दिल्ली	15	18	29	62
11	मणिपुर	14	16	26	55
12	ओडिशा	11	14	17	46
13	उत्तर प्रदेश	13	20	23	56
14	केरल	13	17	24	54
15	राजस्थान	9	11	23	43
16	गुजरात	8	10	20	38
17	झारखंड	7	6	12	25
18	आंध्रप्रदेश	7	1	6	14
19	जम्मू और कश्मीर	5	6	13	24
20	अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह	5	3	2	10
21	चंडीगढ़	4	6	9	19
22	हिमाचल प्रदेश	4	3	8	15
23	अरुणाचल प्रदेश	4	3	6	13
24	असम	3	15	16	34
25	छत्तीसगढ़	3	4	9	16
26	तेलंगाना	3	3	12	18
27	गोवा	2	4	4	10
28	मिजोरम	2	0	1	3
29	बिहार	1	6	5	12
30	मेघालय	1	2	2	5
31	पुडुचेरी	0	1	1	2
32	नागालैंड	0	0	2	2
33	सिक्किम	0	0	2	2

cyber crime against women,its prevention laws in India, and government initiatives

Meaning of cyber crime

Dr. Pratima Singh
Department of Law

Cybercrime can be defined as unlawful activities conducted through the internet and digital devices intending to creep into the private space of others and disturb them with objectionable content and misbehavior.

Internet surfing has become a regular practice for educational, social, entertainment, or professional purposes in today's digital world. Women have been working or learning using online platforms and frequently accessing social media platforms.

While most people are engaged on the internet and other digital platforms for various educational and recreational purposes, many miscreants use these digital tools to abuse and bully online users, especially women. This type of criminal activity is called Cybercrime, as it involves using cyberspace.

Cyber Crime Against Women

Cyber violence uses Computer Technology to access women's personal information and use the internet for harassment and exploitation. Women are becoming soft targets as they often trust other people and are unaware of the consequences.

Cyber crime has increased because it is seldom reported and difficult to detect and prove. Cyber crime is away from traditional monitoring, investigation, or audit and requires specialists to understand the nature of the crime.

Cyber crime affects women the most by subjecting them to mental and emotional harassment. Most women become distressed, humiliated, and depressed under this type of crime which is challenging to address and resolve.

Types of cyber crime

Cyber crime against women includes gender-based and sexual remarks and activities performed through a computer network or mobile phones, affecting the dignity of women and causing emotional distress.

The different types of cyber crime against women are explained as follows:

1.Cyber Stalking: It includes attempting to contact women via social networking sites without any legitimate purpose, putting threatening messages on the chat page, and constantly disturbing the victims with objectionable emails and messages to create mental distress.

2.Cyber Defamation: This activity involves defaming the victim through blackmailing and disclosing their details or modified pictures. It often involves extorting and seeking sexual favors from the victim.

3.Cyber Hacking: It includes asking to click on unauthorised URLs or download apps that is not secure and can compromise with your data, and the women became victims of cyber hacking. The criminals utilise these details for unauthorised monetary transactions and other unlawful activities.

4.Cyber Bullying: It means regular harassment and bullying of the victim through the digital communication device by sending abusive and misleading content, photos, or videos and sending rape and death threats.

BCyber Pornography: Pornography is when people share intimate images, videos and stories without the actual consent. This is a form of cyber exploitation that mostly happens with women.This malicious act not only violates privacy but can affect victims in severe emotional and psychological damage.

6.Cyber Grooming: In this case, a person builds a relationship with a woman through an online platform and pressurizes her for undue favours or doing sexual acts.

How to Tackle Cyber Crime

The most important part is to have a thorough knowledge and awareness about privacy and cyber crimes to avoid people being vulnerable to such threats. There must be more education on cyber crimes and online fraud and how to get rid of or handle them. Cyber literacy should start from the basic level with adequate knowledge about good operating practices.

It is necessary to remain extra vigilant about cyber privacy and security. Proper awareness and education can help teach good habits and techniques while working online with digital devices. There has been an increasing trend in cyber crime against women involving blackmailing, fake profiles, morphed images, and publishing or transmitting sexually explicit messages online.

Measures for Cyber Safety

These are some of the measures that can be taken to protect oneself from cyber crimes:

"Keep a watch on irrelevant or fraudulent messages or emails.

"Avoid responding to emails asking for personal information.

"Avoid accessing fraudulent websites or apps that require personal information.

"Take care of the email address and password.

"Use strong and secure passwords and keep on changing them regularly.

"Don't click on unrecognized UPL or download unknown apps.

"Remain updated about cyber laws and policies.

Present cyber laws for the protection of women:

All users of cyberspace are subject to specific laws applicable worldwide. Cyber laws deal with legal issues arising from networked computer technology and digital platforms. These laws protect the victims against cyber crimes and help them address the issues and get justice.

The following acts under the Indian Penal Code (IPC, 1860) section 354 mention the following crimes as punishable under the law.

"Section 354A: Demand for sexual favors or displaying objectionable pictures against a woman's consent or making sexual remarks and sexual harassment will cause imprisonment of up to 3 years with fines.

"Section 354C: An act of photographing or publishing a picture of a woman engaged in a private act without her consent will lead to imprisonment of 3 to 7 years.

"Section 354D: Contacting a woman online and sending irrelevant emails/messages despite the woman's evident disinterest will cause imprisonment of 5 years with fines.

The Information Technology Act of 2000 also has provisions for punishment under the following sections:

"Section 66C-Identify cyber hacking is a punishable offense with imprisonment of 3 years and fines of Rs. 1 lakh.

"Section 66E- Deals with the offense of capturing, publishing, or sending pictures of women in circumstances that violate privacy. This causes imprisonment of 3 years.

"Section 67A- Makes it illegal to publish and transmit sexually explicit content and is punishable with imprisonment of up to 5 to 7 years.

The Cyber Crime Prevention Act of 2012 focuses on preventing and punishing offenders involved in cyber crimes like violating privacy, confidentiality, and integrity of information through computer-related criminal activities.

The Indecent Representation of Women (Prohibition) Act regulates and prohibits the indecent representation of women through the media and publications, which also includes the audio-visual media, the content in electronic form, and distribution of material on the Internet and the portrayal of women over the web.

Cyber-Security and Government of India

The Cyber Crime Prevention against Women and Children (CCPWC) scheme is introduced to develop effective measures to handle cyber crimes against women and children in India. It allows a cybercrime victim to file a complaint through an online cybercrime reporting platform. The platform also provides details of law enforcement and regulatory agencies at the local and national levels. The CCPWC also conducts awareness programs starting from the school level as a proactive measure to mitigate cyber crimes.

Prevention of Cyber Crime Against Women:

The most important part is to have a thorough knowledge and awareness about privacy and cyber crimes to avoid people being vulnerable to such threats. There has to be more education on cyber crimes and online fraud and how to get rid of them or handle them.

Cyber literacy should start from the basic level with adequate knowledge about good operating practices. It is necessary to remain extra vigilant about cyber privacy and security. Proper awareness and education can help teach good habits and practices while working online with digital devices.

There is also a need for stricter law enforcement and punishment for offenders. Media interventions for creating public awareness can make an effective contribution in bringing about changes in the attitudes of people towards gender norms.

Cyber Violence Against Women- Data

Here is some important data on cyber harassment of women in India:

A total of 10,405 cyber crimes against women were reported in 2020, with an increase of 24%. The Information Technology Act of 2000 is the primary law in India dealing with cyber crime.

Conclusion

In an increasingly technology-dependent world, cyber violence tend to increase, with women becoming the soft targets. The legislation must go the extra mile to punish such criminals with strict actions. To prevent cyber crime against women, greater awareness and knowledge about cyber practices, privacy protection, and legal security are required.

Literature as a Tool for Climate Activism: A 21st-Century Perspective

Prof, GeetanjaliTewari
Department of English

The 21st century has seen an unprecedented escalation in environmental challenges, driven by human activities that have altered the natural balance of the planet.
Literature, as an art form that reflects and critiques societal values, has increasingly addressed these issues. English literature, in particular, has taken up the mantle of exploring environmental concerns, offering insights, raising awareness, and envisioning solutions. Environmental concerns in English literature are not new. Writers like William Wordsworth and Henry David Thoreau engaged with nature in their works during earlier centuries. However, the 21st century has brought a more urgent focus on ecological crises due to the unprecedented scale of human impact on the planet. This urgency is reflected in the proliferation of literary works that address topics such as climate change, deforestation, biodiversity loss, and pollution.
Contemporary writers engage with environmental themes in diverse ways. Some create speculative futures that warn of ecological collapse, while others ground their narratives in present-day realities. Whether through dystopian settings, ecofeminist perspectives, or urban ecologies, these works challenge readers to reconsider their relationship with the environment.
Climate change has emerged as one of the most dominant themes in 21st-century literature. The catastrophic consequences of rising global temperatures, extreme weather events, and shifting ecosystems are explored in both speculative and realistic fiction. Margaret Atwood's "MaddAddam" trilogy exemplifies the use of speculative fiction to address climate change. The trilogy envisions a world devastated by environmental negligence, genetic manipulation, and corporate greed, serving as both a cautionary tale and a call for resilience. Similarly, Kim Stanley Robinson's "The Ministry for the Future" explores the geopolitical and ethical complexities of combating climate change, blending scientific rigor with imaginative storytelling. In contrast, more grounded narratives like Barbara Kingsolver's "Flight Behavior" explore the human dimensions of climate change. Set in rural Appalachia, the novel captures the ways climate shifts disrupt both ecosystems and human lives, offering a deeply empathetic perspective.
The Anthropocene , a term used to describe the epoch in which human activity has become the dominant influence on Earth's systems-has inspired a wealth of literary explorations. Writers interrogate the ethical and existential questions raised by this epoch, often challenging human-centered perspectives. Richard Powers' "The Overstory" exemplifies the Anthropocene narrative. This Pulitzer Prize-winning novel chronicles the lives of several characters whose stories intertwine with those of trees. Powers presents a sweeping exploration of humanity's destructive impact on forests while celebrating the resilience and interconnectedness of non-human life. The novel's intricate structure mirrors the interwoven complexity of ecosystems, urging readers to reconsider humanity's role within nature. Another notable work is Jenny Offill's "Weather," which captures the psychological toll of living in a world threatened by climate catastrophe. The fragmented narrative reflects the fractured nature of modern life and the overwhelming challenge of grappling with environmental crises. These stories underscore the Anthropocene's central paradox: humanity's unparalleled power over nature is both a source of progress and destruction.
Ecofeminism, a framework linking environmental degradation with patriarchal and capitalist exploitation-has gained prominence in English literature. Many authors use ecofeminist perspectives to explore how marginalized groups, particularly women, disproportionately bear the burdens of environmental destruction. Barbara Kingsolver's "Flight Behavior" juxtaposes ecological concerns with the struggles of its protagonist, a young woman living in an impoverished Appalachian community. The novel portrays how economic inequality and environmental degradation intersect, offering a critique of systemic injustices that exacerbate ecological crises. Monique Roffey's "The Mermaid of Black Conch" blends mythology and environmental themes to critique colonialism and environmental exploitation. The mermaid, a symbol of the natural world, becomes a victim of human greed and violence, representing the broader destruction of ecosystems and indigenous cultures. Through these narratives, ecofeminist literature not only critiques existing systems but also envisions alternative, sustainable futures rooted in care and equity.
Urbanization, a hallmark of modern development, is a recurring theme in contemporary literature. Writers explore the environmental costs of urban growth, including pollution, resource depletion, and habitat destruction. China Miéville's "The City & the City" offers a speculative exploration of urban spaces, examining how individuals navigate and perceive their environments. While not overtly about environmental concerns, the novel's meditation on coexistence and spatial awareness resonates with themes of urban ecology and sustainability. In Ian McEwan's "Solar," urban pollution and the complexities of implementing green technologies are satirized through the lens of a flawed protagonist. McEwan critiques the human tendency toward inertia and self-interest, highlighting the challenges of addressing ecological issues in urban settings. These works prompt readers to reflect on the environmental consequences of modern lifestyles and the potential for creating greener cities.
Climate fiction, or "cli-fi," has emerged as a significant genre within 21st-century literature. By blending speculative storytelling with pressing ecological concerns, cli-fi offers imaginative responses to climate change while envisioning potential futures. In novels like Kim Stanley Robinson's "New York 2140," cli-fi explores the societal and technological adaptations required to survive in a climate-altered world. Robinson's work combines speculative elements with meticulous research, creating narratives that are both cautionary and hopeful. Similarly, Paolo Bacigalupi's "The Water Knife" examines the geopolitical and humanitarian crises stemming from water scarcity, showcasing cli-fi's potential to tackle diverse environmental issues.
Contemporary writers increasingly adopt multispecies perspectives, challenging anthropocentrism by centering non-human characters and ecosystems. These narratives emphasize the interconnectedness of all life forms and advocate for ecological inclusivity. Laline Paull's "The Bees" tells the story of a worker bee navigating a hive's hierarchical society. By presenting the world from a bee's perspective, Paull highlights the fragility of ecosystems and the devastating impact of human activities on pollinators. Similarly, Richard Powers' "The Overstory" gives voice to trees, portraying them as active participants in the world's ecological drama. These multispecies narratives invite readers to step outside human-centric viewpoints and recognize the intrinsic value of non-human life.
Environmental literature often employs innovative narrative techniques to reflect the complexity of ecological issues. Fragmented structures, polyphonic voices, and non-linear timelines are common features in works addressing environmental concerns. David Mitchell's "Cloud Atlas" exemplifies this approach, weaving interconnected stories across time and space. The novel illustrates the cumulative impact of human actions on the environment, drawing parallels between past exploitation and future consequences. By employing experimental structures, environmental literature captures the multifaceted nature of ecological crises and emphasizes their interconnectedness with social, economic, and cultural systems.
One of the primary functions of environmental literature is to raise awareness about ecological issues. By embedding environmental themes in compelling narratives, writers make abstract concepts like climate change more tangible and relatable. Naomi Klein's non-fiction works, such as "This Changes Everything," incorporate storytelling techniques to engage readers and underscore the urgency of action. Similarly, fiction like Amitav Ghosh's "Gun Island" highlights the human dimensions of climate displacement, making the global crisis feel personal and immediate.
Beyond awareness, literature can inspire readers to take action. By envisioning sustainable futures or depicting successful acts of resistance, writers motivate individuals to contribute to environmental change. Kim Stanley Robinson's "The Ministry for the Future" is particularly notable for its actionable vision. The novel not only explores the consequences of inaction but also outlines potential solutions, from financial reforms to geoengineering. Such works empower readers by showing that change is possible, even in the face of overwhelming challenges.
Literature fosters empathy by presenting diverse perspectives on environmental issues. By centering marginalized voices, non-human life, and global perspectives, writers help readers develop a deeper understanding of ecological crises and their unequal impacts. For instance, N.K. Jemisin's "The Broken Earth" trilogy combines speculative fiction with themes of environmental collapse, exploring how systemic oppression and ecological destruction intersect. By humanizing the experiences of those most affected, such narratives build solidarity and a collective sense of responsibility.
Despite its potential, environmental literature faces significant challenges. Critics argue that it often reaches only those already invested in ecological issues, limiting its impact on broader audiences. Additionally, the complexity of environmental crises can make them difficult to translate into accessible narratives without oversimplification. Another critique is the Western-centric nature of much 21st-century environmental literature. While writers from the Global North dominate the genre, those from the Global South-where the effects of climate change are often most severe-are underrepresented. Expanding the canon to include diverse voices is crucial for a more comprehensive understanding of global ecological challenges. However, these challenges also present opportunities. By embracing inclusivity, experimental forms, and cross-disciplinary approaches, environmental literature can reach wider audiences and inspire meaningful change.
The 21st century has witnessed a remarkable rise in environmental concerns within English literature, reflecting the urgency of ecological crises. Through experimental storytelling, genre-blending techniques, and a commitment to inclusivity, environmental literature challenges traditional paradigms and advocates for a more sustainable relationship with the planet. Literature remains a vital medium for raising awareness, fostering empathy, and inspiring action.

डी. ए.वी. (पीजी) कॉलेज खेल गतिविधियां -2024

राष्ट्रीय लेवल पर प्रतिनिधित्व करती उत्तराखंड की छात्रा

संस्थापक :– श्री मानवेन्द्र स्वरूप, संरक्षकः– प्रो. सुनील कुमार , सम्पादक :–डॉ. रवि शरण दीक्षित, उपसम्पादकः– डॉ. विमलेश डिमरी, प्रकाशकः– डीएवी पीजी कॉलेज, देहरादून

Email: newsletter.dav@gmail.com, Mob :- 919837318301